

चित्रकला का सिरमौर है यह सूबा : रजा

भारत भवन में
'फ्यूजन' की शकल
में चित्तेरों ने
किया स्वागत



होते जाने का संकेत है।

...जैसे देह में आत्मा
बस गई!

रजा को अपने बीच पाकर राजधानी के बड़े-छोटे सभी चित्रकार खासे गर्व और खुशी से भरे थे। सुरेश चौधरी ने भावुक होकर कहा- 'रजा को यहाँ पाकर लगा जैसे देह में आत्मा आ गई। वे उन विरले कलाकारों में शुमार हैं, जो युवा चित्रकारों की परवाह करते हैं। पिच्चासी बरस की देह में रजा जो ऊर्जा और उत्साह लेकर चलते हैं, प्रणम्य है।' सचिदा नागदेव तीस बरस पुरानी याद ताज़ा करते हुए कहते हैं कि रजा को वे एक प्रदर्शनी के सिलसिले में पहली बार मुंबई से भोपाल (कला परिषद) लेकर आए थे। उनके वरदहस्त के कारण आज एक पीढ़ी विश्व फलक तक जा पहुँची है। मंजूषा गांगुली ने अभिभूत होकर सिर्फ इतना कहा- 'रजा तो कला के देवदूत की तरह लगते हैं।' ल.ना. भावसार 'फ्यूजन' की तारीफ करते हुए 'रंगायन' की इस पहल को हिम्मत भरी कल्पनाशीलता कहते हैं और देवीलाल पाटीदार की नजर में रजा जैसे सांताकलाज हैं, जो हर साल युवा चित्रकारों के लिए पेरिस से तोहफे लिए चला आता है।-कप्र

भोपाल। कलाओं के घर भारत भवन की रंगदर्शनी दीर्घा मंगलवार की शाम श्रद्धा के सुनहरी रंगों से सराबोर थी। दुनिया भर में रंगप्रियता और चित्रकारी की नायाब मिसाल बन चुके सैयद हैदर रजा ने जैसे ही इस कला परिसर में प्रवेश किया। सारा माहौल कृतज्ञता से भीग उठा। दरअसल यह भारतीय चित्रकला के सिरमौर और युवा चित्तेरों के परम हितैषी रजा के सम्मान में सजाई गई एक अनूठी नुमाइश थी। रजा ने भी मुक्त मन से आशीर्वाद दिया- 'मैं भोपाल के वरिष्ठ और युवा कलाकारों का काम देखकर अत्यंत प्रसन्न हूँ। मध्यप्रदेश भारत की धड़कन है। यहाँ की आवाज़ पूरी दुनिया में सुनी जाती है। यह राज्य कला का सिरमौर है।'

पेरिस में बसे रजा ने आज एक बार फिर अपने भारत प्रवास के दौरान बहुकला केन्द्र में वक्त गुजारा। यहाँ के कलाकारों ने उनके स्वागत में

अपनी चित्रकृतियाँ सजाई। रजा ने भी एक-एक चित्र को धैर्य से देखा और कलाकारों से बातचीत की। आत्मीयता की महक बिखेरता यह अनूठा समागम 'रंगायन' की एक रचनात्मक पहल है, जिसे नाम दिया है- 'फ्यूजन'। रंग और रूपाकारों में कथ्य और सैली के निराले आयाम समेटती, यह प्रदर्शनी एक अर्थ में आधुनिक चित्रकला के क्षितिज पर मग्न की स्वर्णिम उपस्थिति का

परिचायक भी है। यह 'फ्यूजन' वरिष्ठ चित्रकार सुरेश चौधरी, ल.ना. भावसार, सचिदा नागदेव, लक्ष्मण भांड, मंजूषा गांगुली, अखिलेश वर्मा से लेकर साजिद प्रेमी, हिरेन्द्र शाह, संदीप सोनी, भावना चौधरी, हिमांशु जोशी, वसंत भार्गव और संजु जैन सहित दो दर्जन से भी ज्यादा चित्रकारों के रूपहले उजास से दीप्त है। रजा ने प्रसन्न भाव से कहा कि मैं सदा ही मध्यप्रदेश की

युवा चित्र प्रतिभा का प्रशंसक रहा हूँ। इसी बिरादरी के चित्रकार आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने काम की वजह से ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। रजा ने प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी- 'कुछ अच्छी, कुछ बहुत अच्छी और कुछ बेहतर होने की माँग करती हैं, लेकिन लोग सिरज रहे हैं और दर्शक उन्हें देख रहे हैं। यह चित्रों की दुनिया के समृद्ध